CONTENTS

INDEX	page
Financial Designing: Innovations in Indian Banking Sector **Dr.Ajit Kumar Bansal**	02
A Study Of Attitude Of Upper Primary School Teachers Towards Inclusive Education **Mr. Suresh Singh Mehta, Dr. Manju Singh**	09
मेरठ मंडल के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन' (डॉ0) बी0 सी0 दूबे श्री संजीव कुमार कमोद कुमार	22
विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्व श्रीमति मनीषा टोंके	36
मूल्य शिक्षा द्वारा आचरण, शांति तथा सद्भावना का निर्माण श्री प्रिन्स परमार	41

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

DVS International Journal of Multi-Disciplinary Research
ISSUE: 04 Vol: 1, No.4 April – June, 2016
ISSN NO 2454-7522

''मेरठ मंडल के प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''

प्रोफेसर (डॉ0) बी0 सी0 दुबे
विभाग अध्यक्ष

श्री संजीव कुमार
सहायक प्रोफेसर

श्री कमोद कुमार
सहायक प्रोफेसर

सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ।

प्रस्तावना

शिक्षा ज्ञान का वह अमूल्य अस्त्र है जो अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, जिससे सभ्यताएँ बनती हैं, संस्कृतियाँ परवान चढ़ती हैं व इतिहास लिखे जाते हैं। शिक्षा दर्शन है व सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। इसीलिए शिक्षा को विकास के एक मापदण्ड के रूप में पहचाना जाने लगा है। जो राष्ट्र पढ़ता है वही आगे बढ़ता है। किसी भी समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर होना है तो शिक्षा को ही माध्यम बनाना पड़ेगा। शिक्षा ही मात्र ऐसा साधन है जिसके सहारे व्यक्ति और समाज में चेतना जागृत कर उसकी कार्य क्षमता में वृद्धि की जा सकती है। शिक्षा का अर्थ है, ''व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास''। वर्तमान समय में शिक्षा की अवधारणा बदल गई है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है, अतः हम सबको अपने क्षेत्र में जीवनपर्यन्त कर्त्तव्य है कि वह अपने गाँव व समाज में रहने वाले व्यक्तियों को इस प्रकार शिक्षा दे कि वे अपनी आवश्यकताओं पर आधारित विकास करते रहे तथा इससे शक्ति, सद्भाव और सामाजिक न्याय को बल मिलता रहे। आज दुनिया में हमारा वर्तमान समाज परिवर्तन व विकास के एक बहुत ही महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसे में अध्यापक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि एक अध्यापक ही वह व्यक्ति है जो देश के भावी नागरिकों के सम्पर्क में आता है और अपने आचार–विचार तथा व्यवहार से उन्हें प्रभावित भी करता है। यह बात सर्वविदित है कि एक अध्यापक के कंधों पर राष्ट्र के भविष्य के निर्माण करने का उत्तरदायित्व होता है। सामाजिक, आर्थिक व राष्ट्रीय विकास का सूत्रधार भी अध्यापक ही होता है। एक अध्यापक ही वह व्यक्ति है जो समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं, आदर्शों व मूल्य आदि को वास्तविक रूप देने की जिम्मेदारी वहन कर सकता है। वास्तविक रूप में अध्यापकगण ही अपने प्रयासों से भावी समाज का निर्माण करते हैं। इसीलिए समाज में अध्यापकों का विशेष दर्जा होना चाहिए तथा सरकार को भी अध्यापकों के प्रति उपेक्षित भाव नहीं रखना चाहिए। अनेक बार विभिन्न विद्वानों ने अध्यापकों को राष्ट्र निर्माण बढ़ाया है।

मुख्य तथ्य : प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0 टी0 सी0, प्रशिक्षित शिक्षकों, शिक्षामित्रों,व्यावसायिक संतुष्टि।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् देश को जनसंख्या परिवर्तन तथा अन्य सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा और ऐसे में शिक्षा की माँग और बढ़ी। ऐसे समय में सरकार द्वारा विभिन्न आयोगों की स्थापना की गई और उन आयोगों द्वारा शिक्षा व शिक्षकों के सभी पहलुओं का अध्ययन किया गया और सभी का निष्कर्ष यही निकला कि शिक्षक शिक्षा जगत की एक बहुत ही महत्वपूर्ण कड़ी है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। शिक्षा में सुधार लाने से पहले शिक्षक–प्रशिक्षक व शिक्षकों के रहन–सहन, खान–पान, दैनिक दिनचर्या, सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक स्थिति में

सुधार लाना होगा क्योंकि जब तक मनुष्य के भावात्मक पक्षों का सही से विकास नहीं किया जाता तब तक उस व्यक्ति द्वारा उपयुक्त निष्पत्ति प्राप्त नहीं की जा सकती।

अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का एकमात्र विकल्प शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से ही किसी राष्ट्र को विकसित, क्रियाशील व समृद्धिशाली बनाया जा सकता है। शिक्षा की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि कोई भी बालक/बालिका निरक्षर न रहे और ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता पड़ेगी जिनमें शिक्षण योग्यता के साथ–साथ अपने व्यवसाय से संतुष्टि हो व व्यवसाय की कार्यदशाओं से समायोजन तथा कार्य जिम्मेदारी से निवर्हन करने की क्षमता हो।

शिक्षा एक व्यवसाय है, ऐसा व्यवसाय जो चोरबाजारी, भ्रष्टाचार आदि से परे स्वस्थ परम्पराओं का निर्माण कर राष्ट्र विकास के स्वप्न को पूरा करता है। जब हम शिक्षण को व्यवसाय मानते हैं तो इसके दायित्व को भी समझना होगा। डॉ0 कार के अनुसार, ''विद्यमान परिस्थितियों तथा भविष्य की सम्भावनाओं का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट है कि विश्वव्यापी प्रवृत्ति शिक्षक की नव–शक्ति का बदलने की है– (1) लोग यह समझते हैं कि शिक्षा तथा विद्यालय समान हैं। (2) शिक्षा में व्याप्त सनक का शिकार होना है। (3) सर्वाधिक भय है कि जनता शिक्षक का विश्वास खो बैठती है।''

अध्यापक के विषय में **चार्ल्स लैम्ब** ने कहा है, ''वह जागरुक है परन्तु अपने समस्त समाज में उसका अपना कोई स्थान नहीं है, वह छोटे बच्चों के बीच गुलीवर की तरह आता है और वह अपने अवबोध को आप तक नहीं पहुँचा सकता। वह चौराहे पर आपसे नहीं मिल सकता। वह अध्ययन में इतना व्यस्त है कि आपको भी पढ़ाना चाहेगा।'' इससे अध्यापक के कार्य की गरिमा और उसकी अपेक्षा दोनों का आभास होता है।

आज की परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि शासन तथा प्रबन्धकारिणी के दो पाटों में पिसते अध्यापक के प्रति शासन तथा समुदाय अपना दृष्टिकोण बदले। शासन का कर्त्तव्य है कि वह शिक्षा का राष्ट्रीयकरण करे। इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि समुदाय द्वारा उत्पन्न अनेक समस्याओं का अंत हो जायेगा और समानता का भाव विकसित होगा। शिक्षा को घोषित राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन कर उसे राष्ट्र के अनुकूल बनाया जाये तथा शिक्षा को दलगत राजनीति से परे रखा जाये। क्योंकि वह तात्कालिक लाभ की बजाय भावी समाज का निर्माण करने में सफलता प्राप्त करेगी।

शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों का महत्व प्राथमिक स्तर की शिक्षा से लेकर महाविद्यालय स्तर की शिक्षा तक है। प्राथमिक स्तर पर तो शिक्षक की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है क्योंकि इसी स्तर पर शिक्षक का बालक का रूप निर्धारित करना पड़ता है। जिस प्रकार एक कुम्हार चाक पर मिट्टी चढ़ाकर उपयोगी स्वरूप प्रदान करता है, उसी प्रकार एक शिक्षक कच्ची मिट्टी के समान बालक का विकास कर एक उपयोगी विकसित, सभ्य व सृजनशील इंसान का निर्माण करता है।

अपने आसपास के वातावरण, रहन–सहन, खान–पान, आचार–विचार को एक बालक किस प्रकार ग्रहण करता है, यह किसी हद तक शिक्षक पर निर्भर करता है। वस्तुतः एक शिक्षक में बच्चे को जानने की क्षमता, उसके साथ कार्य करने की सामर्थ्य तथा शिक्षण योग्यता आदि गुणों का होना आवश्यक है अर्थात् शिक्षण कार्य ऐसा व्यक्ति

ही कर सकता है जिसमें बौद्धिक, शारीरिक, सांवेगिक, सामाजिक व नैतिक आदि कुछ विशिष्ट गुण विद्यमान हों। हमें यह नहीं समझना चाहिए कि एक शिक्षक के ये गुण केवल प्रथमिक स्तर पर ही वांछित हैं, बल्कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर एक शिक्षक में इन गुणां का होना आवश्यक है। यदि प्राथमिक स्तर पर बालक को सही दिशा में मोड़ दिया जाता है तो माध्यमिक व उच्च स्तर पर भी उसका असर पड़ता है और बालक बड़ा होकर एक जिम्मेदार नागरिक बनता है जो समाज के विकास में योगदान कर सके।

मनुष्य में सीखने की प्रवृत्ति जन्मजात होती है। वह सदैव कुछ न कुछ नया सीखने के लिए आतुर रहता है। उसकी इसी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए एक उचित मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ती है और यह मार्गदर्शन का कार्य एक शिक्षक ही भली–भाँति कर सकता है।

देशकाल व परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षक–शिक्षा में भी परिवर्तन हुआ है। लेकिन शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन नहीं हुआ है और यह कोशिश की जा रही है कि समाज से योग्य शिक्षकों का चुनाव हो जो देश के भावी नागरिकों का निर्माण कर सकें। आज की शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। इसीलिये शिक्षक को शिक्षा की प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्रता दी जानी चाहिए शिक्षक को अपनी सूझ–बूझ में लिखा और अवबोद्य के आधार पर शिक्षक विधियाँ व पाठ्यक्रम में सुधार का अवसर देना चाहिए।

समस्या की उत्पत्ति–

समाज में माता को प्रथम शिक्षिका माना जाता है। क्योंकि बालक जन्म के पश्चात् सर्वप्रथम माँ के सम्पर्क में आता है और माँ से ही शिक्षा ग्रहण करता है। इसके पश्चात् बालक परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आता है और उनसे शिक्षा प्राप्त करता है। धीरे–धीरे बालक बड़ा होता है और घर के बाहर अन्य पास–पड़ौस के सदस्यों के सम्पर्क में आता है और जाने–अनजाने उनसे भी कुछ–न–कुछ सीखता है। इसके पश्चात् बालक विद्यालय जाता है। विद्यालय मे एक शिक्षक बालक का आदर्श होता है। शिक्षक के प्रत्येक व्यवहार का प्रभाव बालक पर पड़ता है। अर्थात हम यह कह सकते हैं कि यह पहला और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्तर होता है जब बालक शिक्षक का अनुकरण करने लगता है और शिक्षक जान–बूझकर बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। शिक्षा के मुख्यतः तीन स्तर माने जाते हैं जिनका अपना–अपना विशेश महत्त्व है। वैसे तो तीनों स्तर परस्पर अवलाम्बित हैं परन्तु प्राथमिक स्तर को शिक्षा का मूल माना जाता है।

यह माना जाता है कि कोई भी व्यक्ति अपने कार्य में तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक वह अपने कार्य को पूरे मन से न करे और व्यक्ति उसी कार्य को पूरे मन से करता है जिसे कारने की उसमें रूचि एवं क्षमता दोनों हों। व्यवहार में यह देखा गया है कि जब किसी व्यक्ति को उसकी रूचि और योग्यता के अनुरूप कार्य नहीं मिलता तो वह उस कार्य को सही ढंग से नहीं कर पाता और न ही अपने आप को उस कार्य में सही ढंग से समायोजित कर पाता है। इससे दोनों तरह से नुकसान होता है एक तो जो कार्य उसे दिया गया है उसे वह ठीक ढंग से नहीं कर पाता तथा दूसरा वह व्यक्ति निराशा से ग्रसित हो जाता है तथा उसका स्वयं का संतुलित विकास नहीं हो पाता।

शोधकर्त्ता ने जब यह समस्या अनुभव की कि एक तरफ तो एक व्यक्ति जिसने माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्य करने के लिये प्रशिक्षण प्राप्त किया है (विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षत शिक्षक) तथा दूसरी उसमें योग्यता भी है लेकिन परिस्थितिवश उसे अपने साथ समझौता करना पड़ता है और प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने हेतु विवश होना पड़ता है, तो क्या ऐसा व्यक्ति अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो सकेगा? क्या ऐसा व्यक्ति वहाँ के वातावरण से समायोजन कर पायेगा? वहीं दूसरी तरफ ऐसा व्यक्ति जिसमें प्राथमिक स्तर पर शिक्षण करने की योग्यता भी नहीं है और न ही कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया है, तो क्या वह व्यक्ति भी अपने व्यवसाय से संतुष्ट होगा? और वह व्यक्ति जिसे क्षमता न होते हुए भी वह कार्य करना पड़ता है, क्या ऐसा व्यक्ति वहाँ के वातावरण से समायोजन कर पायेगा? शोधकर्त्ता अपनी इसी जिज्ञासा को शांत करने हेतु उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना चाहता है।

समस्या का परिभाशीकरण– समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्यवहारिक परिभाशा निम्नलिखित है।

मेरठ मंडल– मेरठ मंडल से तात्पर्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक क्षेत्र जिसके अन्तर्गत मेरठ, बुलन्दशहर, बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर तथा हापुड़ छः जनपद आते हैं, से है।

प्राथमिक स्तर– प्राथमिक स्तर से तात्पर्य उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिशद द्वारा संचालित परिशदीय विद्यालयों से है। जिसके अन्तर्गत कक्षा एक से कक्षा पाँच तक की शिक्षा प्रदान करने वाले सरकारी विद्यालय आते हैं।

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक– बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का अभिप्राय उन शिक्षकों से हैं जो बेसिक टीचर सर्टिफिकेट प्रशिक्षण प्राप्त कर प्राथमिक स्तर पर शिक्षण हेतु सरकार द्वारा नियुक्त किये गये हैं।

विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक– विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों का अभिप्राय उन शिक्षकों से है जो बी0एड0/बी0पी0एड0/एल0टी0 के प्रशिक्षण के उपरान्त सरकार द्वारा छः माह का विशिष्ट प्रशिक्षण प्रदान कर प्राथमिक विद्यालयों मतें नियमित शिक्षक के रूप में नियुक्त किये गये हैं।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

शिक्षामित्र– शिक्षामित्र का अभिप्राय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत उन शिक्षकों से हैं जो ग्राम शिक्षा समिति/नगर शिक्षा समिति के प्रस्ताव के उपरान्त जिला स्तरीय समिति द्वारा अनुमोदन किये जाने के पश्चात् नियुक्त किये गये थे। जिनकी योग्यता इंटरमीडिएट थी तथा अस्थायी रूप से कक्षा एक एवं दो में शिक्षण में सहायता के लिये निर्धारित मानदेय पर नियुक्त किये गये थे तथा वर्तमान में सरकार द्वारा नियमित शिक्षक के रूप में स्थायी शिक्षक के रूप में समायोजित किया जा रहा है।

व्यावसायिक संतुष्टि– व्यक्ति के किसी व्यवसाय को अपनाने या प्राप्त करनेके उपरान्त उस कार्य को करने में उसे जो आत्मिक संतुष्टि का अनुभव होता है, वह व्यवसायिक संतुष्टि कहलाती है। यह संतुष्टि व्यक्ति को तभी प्राप्त होती है जब उसके द्वारा किया जाने वाला व्यवसाय उसकी योग्यता, रूचि एव इच्छा के अनुसार होता है।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्टि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. शिक्षामित्रो एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

वर्तमान शोध की परिकल्पनाएँ– प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रो की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. शिक्षामित्रो एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. **प्रस्तुत शोध का शोध अभिकल्प-** प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक स्तर पर कार्यरत बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों , विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों तथा शिक्षामित्रों पर किया जा रहा है । इस तरह वर्तमान शोध में तीन शिक्षक समूह है और इस प्रकार के समूह की प्रकृति स्थिर है । इस लिए प्रस्तुत शोध की प्रकृति के अनुसार उपरोक्त तीनो प्रकार के समूहों की तुलना के उद्देश्य से वर्तमान शोध कार्य के लिए स्थिर समूह तुलना अभिकल्प का चयन किया गया है जो कि सर्वे शोध का एक भाग है ।

शोध की जनसंख्या– प्रस्तुत शोध में जनसंख्या अथवा समष्टि से आशय मेरठ मंडल के छः जनपदों में स्थित समस्त परिशदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0 प्रक्षिक्षित शिक्षकों विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षार्मिन्नों से है। अर्थात पूरे मेरठ मंडल के परिशदीय प्राथमिक शिक्षक प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत आते हैं।

समस्त जीवसंख्या पर अध्ययन करने में समय और श्रम दोनों अधिक लगते हैं तथा धन की भी बर्बादी होती है इसलिये कुछ अति महत्वपूर्ण सरकारी सर्वेक्षणों को छोड़कर अधिकांश अध्ययन प्रतिदर्शों के आधार पर किये जाते हैं और प्राप्त परिणामों को समंस्त जनसंख्या पर लागू कर दिया जाता है। प्रतिदर्श जिस सीमा तक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं उसी सीमा तक परिणाम विश्वसनीय होते हैं।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

प्रस्तुत शोध का न्यादर्श– प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश के मेरठ मण्डल के अन्तर्गत आने वाले छः जनपदों बेसिक शिक्षा परिशद द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों पर आधारित है। मेरठ मंडल ऐतिहासिक स्थल है और उत्तर प्रदेश का विकसित मंडल माना जाता है। मंडल में प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की स्थिति जानना आवश्यक है। क्योंकि विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या अधिक है। इसलिये शोधकर्ता ने समय, श्रम व धन का ध्यान रखते हुए तथा अपने शोध की जनसंख्या का स्वरूप को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श प्राप्त करने हेतु सामान्य यादृच्छिक न्यादर्श विधि का चयन किया है। इसमें विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि से तथा शिक्षकों का चयन यादृच्छिकीय विधि से किया है।

चर÷

प्रस्तुत शोध कार्य में 2 प्रकार के चर हैं– स्वतंत्र चर और आश्रित चर ।

i. **स्वतंत्र चर – व्यवसायिक सन्तुष्टि–** प्रस्तुत शोध कार्य में व्यवसायिक सन्तुष्टि से तात्पर्य परिशदीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी0टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों को अपने कार्य तथा उसके परिणामों के सकारात्मक दृष्टिकोण से है। प्रस्तुत शोध कार्य में व्यवसायिक सन्तुष्टि एक स्वतंत्र चर है क्योंकि शोधकर्ता इसमें परिवर्तन कर सकता है और इस परिवर्तन का प्रभाव आाश्रित चर पर देखता है वर्तमान शोध में शोधकर्ता ने व्यवसायिक संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन बी0टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों पर किया है ।

आश्रित चर– शोध में तीन प्रकार के आश्रित चर है –बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षक, विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षक और शिक्षामित्र ।

1. बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षक– बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षक वर्तमान शोध में आश्रित चर के अर्न्तगत आते है क्योंकि शोधकर्ता बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं समायोजन स्तर के बारे में पूर्व कथन करना चाहता है अथवा इनका सावधानि पूर्वक निरिक्षण करता है और उसे रिर्कोड करता है तथा इस चर में होने वाला परिवर्तन स्वतंत्र चर में शोधकर्ता द्वारा किये गये जोड तोड पर आश्रित है । बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों पर व्यवसायिक संतुष्टि एवं समायोजन स्तर का प्रभाव पडता है ।

2. विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षक- विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षक वर्तमान शोध में आश्रित चर के अर्न्तगत आते है क्योंकि शोधकर्ता विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं समायोजन स्तर के बारे में पूर्व कथन करना चाहता है अथवा इनका सावधानि पूर्वक निरिक्षण करता है और उसे रिर्कोड करता है तथा इस चर में होने वाला परिवर्तन स्वतंत्र चर में शोधकर्ता द्वारा किये गये जोड तोड पर आश्रित है । विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों पर व्यवसायिक संतुष्टि एवं समायोजन स्तर का प्रभाव पडता है ।

3. शिक्षामित्र- शिक्षामित्र वर्तमान शोध में आश्रित चर के अर्न्तगत आते है क्योंकि शोधकर्ता शिक्षामित्रों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं समायोजन स्तर के बारे में पूर्व कथन करना चाहता है अथवा इनका सावधानि पूर्वक निरिक्षण करता है और उसे रिर्कोड करता है तथा इस चर में होने वाला परिवर्तन स्वतंत्र चर में शोधकर्ता द्वारा किये गये जोड तोड पर आश्रित है । शिक्षामित्रों पर व्यवसायिक संतुष्टि एवं समायोजन स्तर का प्रभाव पडता है ।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण– शोधकर्ता द्वारा अपने शोध–कार्य में मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है जिससे कि उसके शोध की विश्वसनीयता बनी रहे। शोध में प्रयुक्त परीक्षण निम्नवत है।

व्यवसायिक संतुष्टि :– शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि को मापने के लिए डा0 मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत व्यावसायिक संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया है । इसके निर्माण के लिए सर्वप्रथम परिक्षण में व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बंधित क्षेत्रों का चुनाव अत्यंत गहनता से विचार कर तथा सम्बन्धित क्षेत्र के विशेशज्ञों से परामर्श के उपरान्त परिक्षण में 8 क्षेत्रों का चयन किया गया । और इन 8 क्षेत्रों से 58 पदों का निर्माण किया गया । विचारों की एकरूपता और भाशा की दृष्टि से विचारोपरान्त इन 58 पदों में से 6 पदों को हटा दिया गया तथा शेश 52 पदों को आधार बनाकर शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि मापनी का निर्माण किया गया ।

परिक्षण को निम्न 8 क्षेत्रों में विभाजित किया गया –

1. व्यवसाय के स्वभाविक पक्ष
2. वेतन , कार्यदशाएँ तथा उन्नति के अवसर
3. भौतिक सुविधाएँ
4. संस्थागत योजनाएँ एवं नितियाँ
5. प्राधिकारियों से संतुष्टि

6. सामाजिक प्रतिष्ठा और परिवार कल्याण
7. विद्यार्थीयों से तालमेल
8. सहकर्मियों से सम्बन्धित

समंक संग्रहण तकनीकी –

ऑकडों के संग्रहण हेतु शोधकर्ता द्वारा मेरठ मंडल के छः जनपदों (मेरठ, बुलन्दशहर, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, बागपत, हापुड़) के चयनित प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यो, बी0टी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों से सम्पर्क किया गया तथा अपने आने का कारण बताया। उसके पश्चात् बी0टी0 प्रशिक्षित शिक्षकों, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों को मापनी दी गयी। साथ ही उसे भरने हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये। उन लोगों से कहा गया कि प्रत्येक कथन का उत्तर सोच–विचार कर दिया जाये क्योंकि आपके उत्तर अनुसंधान कार्य हेतु बहुत उपयोगी है। निःसंकोच उत्तर देने की कृपा करें। यह आपके विश्वासमत एवं दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि आप किस कथन के प्रति सहमत हे और किसके प्रति असहमत है। प्रत्येक बी0टी0 प्रशिक्षित शिक्षक, विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षक एवं शिक्षामित्र ने अनुसधानकर्ता के निवेदन को ध्यान में रखते हुए शान्त एवं सौम्यपूर्ण वातावरण में प्रश्नावली को पूरा कर अपना सहयोग दिया। सभी चयनित प्राथमिक विद्यालयों में इसी तरह की

व्यावसायिक संतुष्टि कारक	शिक्षकों की संख्या के		औसतमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी– प्राप्तांक	सार्थकता परिणाम
व्यवसाय के स्वभाविक पहलू	बी0टी0सी0	240	113.56	8.36	0.85	14.02	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	101.64	10.12			
वेतन उन्नति के अवसर और व्यवसायिक स्थिति	बी0टी0सी0	240	116.62	14.07	1.14	3.06	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	120.11	10.54			
भौतिक सुविधाएँ	बी0टी0सी0	240	108.5	9.52	0.83	29.29	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	132.81	8.66			
संस्थागत योजनायें एवं नीतियॉ	बी0टी0सी0	240	80.31	13.97	0.98	18.37	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	62.32	6.05			

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

प्राधिकारी से संतुष्टि	वर्ग बी0टी0सी0	240	103.32	8.97	0.76	20.95	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	119.24	7.62			
परिवारिक समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि	बी0टी0सी0	240	93.69	10.81	0.84	3.92	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	90.4	7.36			
विद्यार्थियों से तालमेल	बी0टी0सी0	240	113.34	12.25	1.03	8.76	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	122.36	10.37			
सहकर्मियों से सम्बंध	बी0टी0सी0	240	100.64	11.65	0.92	7.51	** हाँ
	विशिष्ट बी0टी0सी0	240	93.73	8.25			

प्रक्रिया अपनायी गई।

माध्य– माध्य सम्पूर्ण श्रेणी का प्रतिनिधित्व करने वाला सामान्य औसत मान है। शोध में माध्य ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित सूत्र प्रयोग किया गया है–

प्रमाणिक विचलन– प्रसरण ज्ञान करने हेतु प्रमाणिक विचलन का प्रयोग किया जाता है। प्रमाणिक विचलन माध्य से लिये गये विचलनों के वर्ग के माध्य का वर्गमूल होता है। प्रमाणिक विचलन की गणना हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है–

परीक्षण– दो मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच t परीक्षण द्वारा की जाती है। t परीक्षण का सूत्र निम्नवत है–

सार्थकता –

परीक्षण हेतु 0.05 सार्थकता तथा 0.01 सार्थकता स्तर का प्रयोग किया गया है।

उद्देश्य नं0–1

बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

स्वंतंत्रता अंश 478 सार्थकता स्तर **.01- सारणी मान 2.58 *.05- सारणी मान 1.96 व्यावसायिक संतुष्टि मापनी के कारकों पर बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के प्राप्तांकों के माध्य तथा प्रमाणिक विचलन को दर्शाता रेखाचित्र ।

सारणी का विश्लेशण

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने उद्देश्य संख्या 5 परिकल्पना संख्या–03, बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसाायिक संतुष्टि का तुलनात्मक विश्लेशण करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई है जिसमें व्यावसायिक संतुष्टि के आठ कारकों (व्यवसाय के स्वाभाविक पहलू व वेतन उन्नति के अक्सर और व्यावसायिक स्थिति, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि, पारिवारिक समृद्धि एवं सामाजिक प्रतिष्ठाा से संतुष्टि, विद्यार्थियों से ताल–मेल, सहकर्मियों से सम्बन्ध) पर बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का औसतमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात करते हुए प्रमाणिक त्रुटि ज्ञात की गई जो क्रमशः 0.85, 1.14, 0.83, 0.98, 0.76, 0.84, 1.03, 0.92 प्राप्त हुई। जिसके आधार पर + परीक्षण की गणना की गई जिसमें व्यावसायिक संतुष्टि के आठों कारकों का + प्राप्तांक क्रमशः 14.02., 3.06, 29.29, 18.37, 20.95, 3.92, 8.76, 7.51 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 478 सार्थकता स्तर 0.01 के सारणीमान 2. 59 से ज्यादा प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना सख्या–03 को निरस्त करते हुए अध्ययनकर्ता इस निष्कर्श पर पहुँचा है कि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है जिसमें कारक व्यवसाय के स्वाभाविक पहलू, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, पारिवारिक समृद्धि एवं सामाजिक प्रतिष्ठाा से संतुष्टि, सहकर्मियों से सम्बन्ध पर बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि अच्छी है, कारक वेतन उन्नति के अक्सर और व्यावसायिक स्थिति, भौतिक सुविधाएँ, प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि, विद्यार्थियों से ताल–मेल, पर विशिष्टि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि बी0टी0सी प्रशिक्षित शिक्षकों से उच्च स्तर की है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

उद्देश्य नं0–2

विशिष्टि बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

व्यावसायिक संतुष्टि के कारक	शिक्षकों की संख्या		औसतमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी– प्राप्तांक	सार्थकता परिणाम
व्यवसाय के स्वभाविक पहलू	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	101.64	10.12	0.81	3.96	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	104.85	7.25			
वेतन उन्नति के अवसर और व्यवसायिक स्थिति	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	120.11	10.54	1.14	3.06	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	116.62	14.07			
भौतिक सुविधाएँ	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	132.81	8.66	0.73	1.18	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	131.95	7.16			* नही
संस्थागत योजनायें एवं नीतियॉ	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	62.32	6.05	0.47	5.91	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	65.1	4.06			
प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	119.24	7.62	0.62	6.15	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	115.43	5.74			
परिवारिक समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	90.4	7.36	0.53	5.87	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	87.29	3.73			
विद्यार्थियों से तालमेल	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	122.36	10.37	0.83	2.80	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	120.04	7.68			
सहकर्मियों से सम्बंध	विशिष्टि बी0टी0सी0	240	93.73	8.25	0.65	3.83	** हाँ
	शिक्षामित्र	240	96.22	5.65			

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

स्वंतंत्रता अंश 478 सार्थकता स्तर **.01- सारणी मान 2.58 *.05- सारणी मान 1.96

व्यावसायिक संतुष्टि मापनी के कारकों पर विशिष्ट बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षामित्रों के प्राप्तांकों का माध्य तथा प्रमाणिक विचलन को दर्शाता रेखाचित्र ।

सारणी का विश्लेषण

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने उद्देश्य संख्या 06 तथा परिकल्पना संख्या–04 विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलनात्मक विश्लेशण करते हुए अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई है। जिसमें व्यावसायिक संतुष्टि के आठ कारकों (व्यवसाय के स्वाभाविक पहलु, वेतन, उन्नति के अवसर व्यावसायिक स्थिति, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि, पारिवारिक समृद्धि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में संतुष्टि, विद्यार्थियों से तालमेल, सहकर्मियों से सम्बन्ध) पर विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का औसतमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात करते हुए प्रमाणिक त्रुटि ज्ञात की गई जो क्रमशः 0.81, 1.14, 0.73, 0.47, 0.62, 0.53, 0.83, 0.65 प्राप्त हुई जिसके आधार पर टी परीक्षण की गणना की गई जिसमें व्यावसायिक संतुष्टि के आठों कारकों का टी प्राप्तांक क्रमशः 3.96, 3.06, 1.18, 5.91, 6.15, 5. 87, 2.80, 3.83 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता अंश 478 सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से ज्यादा प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना संख्या–04 को निरस्त करते हुए अध्ययनकर्ता इस निष्कर्श पर पहुँचा है कि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षणों एवं शिक्षार्थियों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है जिसमें कारक वेतन, उन्नति के अवसर व्यावसायिक स्थिति, भौतिक सुविधाएँ, प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि, पारिवारिक समृद्धि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में संतुष्टि पर विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि अच्छी है तथा कारक व्यवसाय के स्वाभाविक पहलु, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, विद्यार्थियों से तालमेल, सहकर्मियों से सम्बन्ध पर शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि विशिष्ट बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों से उच्च स्तर की है।

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

उद्देश्य नं0–3

शिक्षामित्रों एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों एवं व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–

व्यावसायिक संतुष्टि के कारक	शिक्षकों की संख्या		औसतमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी– प्राप्तांक	सार्थकता परिणाम
व्यवसाय के स्वभाविक पहलू	शिक्षामित्र	240	104.85	7.25	0.71	12.19	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	113.56	8.36			
वेतन उन्नति के अवसर और व्यवसायिक स्थिति	शिक्षामित्र	240	120.28	9.31	1.09	3.38	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	116.62	14.07			
भौतिक सुविधाएँ	शिक्षामित्र	240	131.95	7.16	0.77	30.45	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	108.5	9.52			
संस्थागत योजनायें एवं नीतियॉ	शिक्षामित्र	240	65.1	4.06	0.94	16.18	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	80.31	13.97			
प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि	शिक्षामित्र	240	115.43	5.74	0.69	17.55	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	103.32	8.97			
परिवारिक समृद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि	शिक्षामित्र	240	87.29	3.73	0.73	8.77	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	93.69	10.81			
विद्यार्थियों से तालमेल	शिक्षामित्र	240	120.04	7.68	0.93	7.20	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	113.34	12.25			
सहकर्मियों से सम्बंध	शिक्षामित्र	240	96.22	5.65	0.83	5.33	** हाँ
	बी0टी0सी0	240	100.64	11.65			

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

स्वंतंत्रता अंश 478 सार्थकता स्तर **0.01- सारणी मान 2.58 *.05- सारणी मान 1.96

व्यावसायिक संतुष्टि मापनी के कारकों पर शिक्षामित्रों एवं बी0 टी0 सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों के प्राप्तांकों के माध्य तथा प्रमाणिक विचलन को दर्शाता रेखाचित्र ।

सारणी का विश्लेशण

उपरोक्त सारणी के माध्यम से अध्ययनकर्ता ने उद्देश्य संख्या–07 तथा परिकल्पना संख्या–05, शिक्षामित्रों एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलनात्मक विश्लेशण करते हुए अन्तर की सार्थकता

ज्ञात की गई है जिसमें व्यावसायिक संतुष्टि के आठ कारकों (व्यावसाय के स्वाभाविक पहलू, वेतन, उन्नति के अवसर और व्यावसायिक स्थिति, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि, पारिवारिक समृद्धि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि, विद्यार्थियों से तालमेल, सहकर्मियों से सम्बन्ध) पर शिक्षामित्रों एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांको का औसतमान, प्रमाणिक विचलन ज्ञात करते हुए प्रमाणिक त्रुटि ज्ञात की गई जो क्रमशः 0.71, 1.09, 0.77, 0.94, 0.69, 0.73, 0.93, 0.83 प्राप्त हुई जिसके आधार पर ही परीक्षण की गणना की गई जिसमें व्यावसायिक संतुष्टि के आठों कारकों का ही प्राप्तांक क्रमशः 12.19, 3.38, 30.45, 16.18, 17.55, 8.77, 7.20, 5. 33 प्राप्त हुआ। जो स्वतंत्रता अंश 478 सार्थकता स्तर 0.01 के सारणीमान 2.59 से ज्यादा प्राप्त हुआ। अतः परिकल्पना संख्या–05 को निरस्त करते हुए अध्ययनकर्ता इस निष्कर्श पर पहुँचा है कि शिक्षामित्रों एवं बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है जिसमें कारक वेतन, उन्नति के अवसर और व्यावसायिक स्थिति, भौतिक सुविधाएँ, प्राधिकारी वर्ग से संतुष्टि, विद्यार्थियों से तालमेल, पर शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि अच्छी है तथा कारक व्यावसाय के स्वाभाविक पहलू, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, पारिवारिक समृद्धि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा से संतुष्टि, सहकर्मियों से सम्बन्ध पर बी0टी0सी0 प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षार्थियों से उच्च स्तर की है।

शोध के निष्कर्ष – शोध के उद्देश्यों के परिणाम लेखन के पश्चात शोध निष्कर्ष लिखा जाता है प्रस्तुत शोध निष्कर्ष निमंलिखित ळे –

• बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको एव विशिष्ट बी० टी० सी प्रशिक्षित शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि मे सार्थक अन्तर है । वास्तव मे बी० टी० सी प्रशिक्षित शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि विशिष्ट बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको की तुलना मे अच्छी है ।

• विशिष्ट बी० टी० सी प्रशिक्षित शिक्षको एव शिक्षामित्रो की व्यावसायिक संतुष्टि मे सार्थक अन्तर है । वास्तव मे शिक्षामित्रो की व्यावसायिक संतुष्टि विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित शिक्षको की तुलना मे अधिक अच्छी है ।

• शिक्षामित्रो एव बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि मे सार्थक अंतर है । वास्तव मे शिक्षामित्रो की व्यावसायिक संतुष्टि बी० टी० सी० प्रशिक्षित शिक्षको की तुलना मे अच्छी है

शैक्षिक उपयोगिता– वर्तमान शाध प्राथमिक स्तर के शिक्षकों पर किया गया है । इस शोध कार्य की उपयोगिता शिक्षा जगत के लिए बहुत अहम है क्योकि प्राथमिक शिक्षा आगे की सम्पूर्ण शिक्षा की नींव का काम करती है इसलिए प्राथमिक शिक्षा का मजबूत होना नितान्त आवश्यक है । प्राथमिक स्तर की शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका और भी बढ जाती है । यह शोध समाज के लिए बहुत उपयोगी है क्योकि यदि अच्छे शिक्षक होगें तो अच्छी शिक्षा बच्चों को मिलेगी और अच्छे समाज का निर्माण होगा यह शोध सरकार की दृष्टि से भी बहुत उपयोगी है क्योकि यह शोध सरकार के लिए अच्छे शिक्षकों की नियुक्ति का मार्ग प्रशस्त्र करता है इस शोध का विद्यालय प्रशासन के लिए भी महत्व है क्योकि इससे शिक्षकों की योग्यतानुसार शिक्षकों के दायित्व का निर्धारण होता है ।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

Bibliography (सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची)

1. सक्सैना , एन० ए० , मिश्रा , बी० के और मोहंती , आए० के० दृ अध्यापक शिक्षा मेरठ , 2011.(142–154)

2. वर्मा , जी० एस० , भारत मे शिक्षा का विकास , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस , मेरठ , 2003. (275–352)

3. मल्होत्रा , पारख एव मिश्र दृ भारत मे विद्यालयी शिक्षा NCERT , दिल्ली 1986.(127–136) .

4. भटनागर , सुरेश एव कुमार संजय , भारत मे शिक्षा का विकास आर० लाल० , मेरठ 2009 . (331–382) .

5. देव एव दस , मानव अधिकार NCERT दिल्ली 1998

6. कुमार राजेंद्र , विधालय संगठन , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ , 2003 (36–42) .

7. वशिष्ठ , के ० के० , विद्यालय संगठन एव भारतीय शिक्षा की समस्याए , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस , मेरठ 2004 , (68–91) .

8. भटनागर , सुरेश , भारत मे शिक्षा का विकास , सूर्य पब्लिशिंग हाउस , मेरठ 2005. (120–132).

9. सिंह , आर० पी० , बाल विकास के मनोवैज्ञानिक आधार , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा (53–63)

10. ओबराय , एस० सी० , शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एव परामर्श , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2004, (128–159) .

11. NCERT , प्राथमिकशाला शिक्षक के लिए मनोविज्ञान 1993, (344–355) .

12. शर्मा , डी०एल० , आधुनिक भारतीय समाज मे शिक्षा विनय रखेजा , मेरठ 2011 . (75–89) .

13. भटनागर , आर० पी० , शिक्षा अनुसन्धान , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस , मेरठ 2003 . (411–425) .

14. शर्मा , आर० ए० , तुलनात्मक शिक्षा , विनय रखेजा , मेरठ 2011 . (254–291) .

15. मदान , पूनम , उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक , अग्रवाल पब्लिशिंग आगरा 2013 , (427–434)

16. मदान , पूनम एव धर्मेन्द्र कुमार , समसामयिक भारत और शिक्षा , अग्रवाल पब्लिकेशन , आगरा 2015–16 (204–211) .

17. अग्रवाल , विद्या और भटनागर , आर० पी० , शैक्षिक प्रशासन , इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2002 , (258–316) .

18. त्यागी , गुरुसरन दास , भारत मे शिक्षा का विकास , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा 2004–05(473–490) .

19. कुमारी विनोद , शिक्षक , शिक्षण एव तकनीकी , ठाकुर पब्लिशिंग हाउस लखनऊ 2016 . (304–344)

20. भास्कर , सुरेन्द्र एव विश्नोई , सीमा , अधिगमकरता का विकास ठाकुर पब्लिशिंग हाउस , लखनऊ 2016(102–104) .

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522